Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

सुरदास की निर्गुण पर सगुण की जीत

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

सुरदास की निर्गुण पर सगुण की जीत

Dr. Mahavir Singh Khatkar

Hindi Lecturer, Haryana College of Education, Kinana (Jind)

----------♦----------

संसार में अनेक भाषाओं में जो उच्चकोटि के महाकाव्य लिखे गए हैं उनमें सूरदासकृत 'सूरसागर' को विशेष महत्वपूर्ण स्थान है सूरसागर में जिस अस्तिकता, भक्ति के अनेक रूप एवं कृष्ण के उदात्त तथा दिव्यरूप एंव वात्सल्य रस का जो वर्णन मिलता है उसका अन्यत्र मिलना दुर्लभ है इस पवित्र ग्रन्थ ने कृष्ण काव्य परम्परा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य सूरसागर में निगुर्ण पर सगुण की जीत का विवेचन एवं वर्णन करना है।

श्री कृष्ण ने अपने मित्र के व्यवहार से भली भांति समझ लिया कि वह निर्गुणोपासक है तथा प्रेम एंव वियोग का जो उपहास उठाता है जहाँ वियोग का तनिक भी दुख नही होता वहां कभी प्रेम भाव उत्पन्न नही होते भगवान कृष्ण अपने मन में सोचते हैं विरक्ति से यह संसार कैसे चल सकता है अर्थात् सगुण भक्ति से ही संसार की यात्रा पुरी की जा सकती है निगुर्ण द्वारा नहीं। वह अत्यधिक अंहकार से भरा होने के कारण प्रत्येक बात में अदैतवादी सिद्ध करता है। अतः उसे समझाने हेतु सूर के प्रभु, उद्धव को गोपियों के पास ब्रज भेजने का निर्णय करते हैं ताकि गोपियों के वचनों का सुनकर स्वतः सगुण भक्ति के महत्व को समझ जायेगा।[1]

श्री कृष्ण मन ही मन सोचते है उद्धव की निगुर्ण सोच असत्य है क्योंकि यशोदा तथा नंद जैसे माता–पिता इस संसार में नहीं हैं वहां ब्रज में रहते हुए वृषभानु कुमारी राधा के साथ रहकर जो सुख प्राप्त हुआ अन्यत्र कहाँ है। वह सुख ग्वालों तथा गोपियों के साथ रहकर प्राप्त हुआ अन्यत्र कहाँ प्राप्त हो सकता है। वैसा सुख तो बैकुण्ठ में भी नही मिला।[2]

उद्धव ने श्री कृष्ण की प्रेम जनित व्याकुलता को देखकर मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए तथा अभिमान को बढ़ा लिया उद्धव ने सोचा श्री कृष्ण मेरे योग मार्ग को सच्चा मार्ग समझने लगे हैं इसलिए श्री कृष्ण मुझे गोपियों के पास योग की शिक्षा देने के लिए भेज रहे हैं। अब उद्धव अपने मन में अपने योग सिदान्तों की प्रशंसा करने लगे तथा सोचने लगे ये संसार भोग मिथ्या एंव नाशवान है अन्ततः उसने ब्रज जाने की कृष्ण की आज्ञा को शिरोधार्य कर लिया।[3]

श्री कृष्ण ने अपने हाथों से एक पत्र लिखा उसमें उन्होने नंद बाबा से विनम्र निवेदन करते हुए माता यशोदा को हाथ जोड़ते हुए प्रणाम करके पत्र लिखा। अपने ग्वाल मित्रों तथा ब्रज की गोपियों के प्रति प्रेम को प्रकट किया तथा कृष्ण ने प्रकट रूप से गोपियों को योग का संदेश अथवा योग धारण करने को कहा परन्तु मूल–भाव को कोई नही जान पाया अर्थात् मन से कुछ ओर कहकर अपने प्रेम भाव को और अधिक दृढ़ कर दिया।[4]

उद्धव को देखकर किसी ने यह कहा कि यह तो कृष्ण नही है तो सभी ब्रज–बालाएं मुर्छित होकर धरती पर जा गिरी जो जहाँ थी, वे वहीं की वहीं रह गई कृष्ण से मिलने का सपना टुट गया। वे रथ में कृष्ण को न देखकर अत्यंत व्याकुल होकर कहने लगी कृष्ण ब्रज में क्या करने आयेगें क्योंकि उन्हे मथुरा में कुब्जा जैसी सुन्दरी मिल गई है।[5]

उद्धव के स्वागत करने के लिए ब्रज के सभी नर–नारी आए तथा स्वर्ण कलश में दूध, दही से उनको तिलक लगाने के बाद प्रदक्षिणा की तब ब्रज वासियों के प्रेम को देखकर उद्धव का शरीर काँपने लगा तथा हृदय से इतने द्रवित हुए कि उनके मुख से एक भी शब्द नही बोला गया अर्थात् श्री कृष्ण के प्रति इतने अगाढ़ प्रेम को देखकर उद्धव भावुक हो गए।[6]

उद्धव गोपियों को हरि का संदेश सुनाते हुए कहते हैं कि उन्होने कहा है कि तुम विषय–विकारों को त्यागकर निर्गुण निराकार परमात्मा का ध्यान करो।[7]

गोपियां आपस में कहती हैं हे सखियों यह पत्र मधुबन से आया है तो कोई गोपी उस पत्र को प्रेमवश पढ़ती है तो कोई उसे आँखों पर लगाती है तथा कोई उसे छाती पर रखकर श्री कृष्ण के प्रेम की अनुभूति पाती है तो कोई बार–बार उद्धव से पूछती है कि क्या कन्हैया ने स्वयं यह पत्र लिखा है?[8]

इसी बीच एक भ्रमर वहां पर अपने स्वभाव के अनुसार गोपियों के पास पहुँचकर उसने सुन्दर शब्द सुनाया तब गोपिया भम्रर से पूछने लगी अरे भ्रमर तुम्हे कुब्जा ने हमारे पास भेजा है या सुन्दर श्याम कृष्ण से संदेशवाहक बनकर यहाँ आय हो?[9]

एक गोपी उद्धव से पूछती हैं आपने कृष्ण के समान ही वस्त्र पहने है उन्ही के समान श्याम वर्ण है आपका वे हमारा र्स्वस्व पहले ही ले चुके हैं अब आपके सखा की हमारी किस चीज पर निगाह है तथा हे भँवरे आप हमारे मन रूपी कृष्ण को तो मथुरा ले गए जो वहाँ कामिनियों के पास रह रहे हैं। अब यहाँ आने का कारण क्या हैं?[10]

हे भ्रमर हम उन लताओं के समान नही हैं जिन्हे तुम प्राप्त करके फिर छोड़कर भाग जाते हो और अन्य रंग में रंग कर फूलो के साथ क्रीड़ा करने लग जाते हो परन्तु हम तो एकनिष्ठ श्री कृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं हम तो बचपन से ही श्री कृष्ण रूपी उद्यान में पानी पीकर पुष्ठ हुई हैं। हम प्रेम रूपी पुष्प रस से हमारे श्री कृष्ण रूपी भ्रमर से विलास करते रहते हैं अतः योग रूपी वायु के कारण ये लताऐं नही हिलती।[11]

हे गोपियों कृष्ण के संदेश को सुनो तुम समाधि लगाकर निर्गुण ब्रह्मा का ध्यान लगाओ। वे ब्रह्मा अविगत अनश्वर तथा सभी हृदयों में निवास करने वाले हैं। वेद पुराणों के अनुसार भी तत्व ज्ञान के बिना मुक्ति नही प्राप्त हो सकती। वेद पुराणों के

www.ignited.in

अनुसार भी तत्व ज्ञान के बिना मुक्ति नही प्राप्त हो सकती अतः एकचित ओर मन लगाकर ईश्वर के सगुण रूप को त्याग कर निगुर्ण का ध्यान करो।[12]

हे उद्धव! आज हम बड़ी भाग्यशाली बन गई हैं कारण यह है कि जिन आँखों से तुमने भी श्री कृष्ण को देखा था वही आँखे आज हमें भी लग गई हैं तुम्हे देख आनन्द की प्राप्ति हो रही है जिस प्रकार से शीशे में देखने पर दृष्टि अत्यधिक प्रिय लगती है।[13]

गोपियां कहती हैं कि हमारी आँखे तो कृष्ण के दर्शनों की प्यासी हैं वे केवल श्री कृष्ण को ही देखना चाहती हैं। संसार के अन्य आकर्षणों के प्रति वे उदास बनी रहती हैं वे उद्धव को कहती हैं कि वे तो कृष्ण केसर का तिलक लगाकर मोतियों की माला पहनकर हमारे मन रूपी आँगन में एक बार आए थे लेकिन वे फिर लौट गए और हमें विरह रूपी फाँसी डालकर चले गए।[14]

हे सखी पांडे जी यहाँ पर योग सिखाने चले हैं। यह परमार्थ की शिक्षा देने वाले पुराणों का बोझ उसी प्रकार अपने सिर पर लादे हुए घूम रहे हैं जिस प्रकार बंजारा बोझा लादे हुए गली–गली घूमता फिरता है। उसी तरह उद्धव भी बंजारे की तरह ब्रज में घूम रहा है वे उद्धव से कहती हैं हमें तो शरण ओर मान देने वाले कमल नयन श्री कृष्ण ही हैं। वे उद्धव से कहती है जो स्त्रियां विधवा हो गई हैं वे ही योग सीखेंगी लेकिन हमारे पति श्री कृष्ण अभी जीवित हैं।[15]

गोपियां उद्धव को कहती है कि तुम्हारा निर्गुण ब्रह्मा किस देश का रहने वाला है हमें सोंह देकर समझाओ तथा तुम्हारे निर्गुण ब्रह्मा का पिता कौन है? माता कौन है? स्त्री कौन है? उसकी दासी कौन है? उसका रगं कैसा है? उसकी वेश–भूषा कैसी है, ओर वह किस रस का अभिलाषी है? पुनः गोपियां उद्धव को सावधान करती हुई कहती हैं कि यदि तुमने हममे कोई छल–कपट किया तो तुम अपनी करनी का फल पाओगे गोपियों की इस बात को सुनकर उद्धव की बुद्धि मानों नष्ट हो गई।[16]

उद्धव तुम हमारी बातों का बुरा मत मानना लेकिन तुम सब मथुरा वासी कुटिल हो तथा सभी काले रंग के हो। ऐसा प्रतीत होता है जैसे तुम्हे नीले रंग के बर्तन से निकालकर यमुना के पानी में धोने की कोशिश की हो जिसके कारण यमुना का पानी भी काला हो गया है।[17]

हे गोपियों! वे निर्गुण ब्रह्मा सर्वव्यापक है वे परिपूर्ण ब्रह्मा अंखड रूप से सुशोभित हैं तथा मुनियों तथा विद्वानों के लिए भी परम आनन्द स्वरूप है। तुम व्यर्थ में उनको अपना प्रियतम समझकर उनके विरह में व्याकुल हो रही हो। वे सात पातालों पृथ्वी के गर्भ में तथा उपरी भाग में आकाश, जल, वायु में, र्स्वत्र निवास करते हैं, वे अन्तःकरण मन, बुद्धि, चित, अंहकार तथा दसों इन्द्रियों को नियमित करने वाले है। ब्रह्मा तो आपके अन्दर है फिर उनसे विरह की भावना कैसी?[18]

हे उद्धव हम तो नन्द की नगरी की रहने वाली है हमारा नाम गौ चरानी वाली हैं। हमारी जाति ओर कुल भी गोपों का है। गोप होने के कारण हम गोपाल श्री कृष्ण की उपासिकाएं है। गोवर्धन को धारण करने वाले, गायों को चराने वाले तथा वृन्दावन से प्रेम करने वाले श्री कृष्ण ही हमारे इष्टदेव हैं तथा नन्द हमारे राज हैं, यशोदा हमारी रानी है तथा कृष्ण हमारे प्राण हैं। गोपियां कहती है कि आठों महासिद्धियां हमारी दासी हैं अर्थात् कृष्ण प्रेम से प्राप्त सुख की तुलना में आठों सिद्धियों का सुख भी तुच्छ है।[19]

वे कहती हैं यह गोकुल नगरी तो श्री कृष्ण की उपासना करने वाली है वे लोग जो निर्गुण ब्रह्मा के उपासक है वे सब कासी में बसते है। यद्यपि श्री कृष्ण ने हमें अकेले छोड़कर अनाथ बना दिया है फिर भी हम उनके चरणों ही अपना सर्वस्व समझती हैं वे आगे चाँद का उदाहरण देती हुई कहती हैं कि राहु द्वारा चन्द्रमा ग्रास होने पर भी अपनी शीतलता नही छोड़ता तथा यहाँ गोकुल में ऐसी कौन–सी विरहिणी गोपी है जो गुणों के समूह कृष्ण को छोड़कर मुक्ति की कामना करती होगी।[20]

गोपियां आपस में चर्चा करती हुई कहती हैं आज अहीरों के गाँव में एक योग तथा निर्गुण ब्रह्मा रूपी गठरी को बेचने के लिए एक व्यापारी आया है वह हमें मूर्ख समझकर भूसे के बदले कृष्ण रूपी सोना माँगता है परन्तु उसे बड़ा घाटा हुआ है अतः उसके भारी बोझ को किसी ने नही खरीदा है गोपियों ने उद्धव से कहा तुम जल्दी यहाँ से चले जाओ लेकिन अपने साहूकार जिसने तुझे यहा भेजा है लाकर दिखाओं तो तुम्हे मुँह माँगी कीमत देगी।[21]

हे उद्धव हमारे लिए श्री कृष्ण तो उस हारिल पक्षी के समान हैं जो लकड़ी को ही जीवन का आधार मानकर हरदम अपनी चोंच में रखता है उसी तरह उस पक्षी के समान हमने भी श्री कृष्ण को मन से वचन से तथा कर्म से दृढ़तापूर्वक पकड़ रखा है। हम दिन में रात में , जागते, सोते वक्त श्री कृष्ण की ही रट लगाए रखती हैं तथा आपकी योग की बातें तो उस कड़वी–ककड़ी के समान लगती हैं जो गले से नीचे नही उतार सकती।[22]

अन्ततः गोपियों की सगुण भक्ति के आगे नतमस्तक होकर उद्धव कहते हैं में ब्रजवासियों विशेषकर गोपियों पर न्यौछावर जाता हूँ जिनके संग गिरिधारी ने क्रिड़ाए की हैं तथा मैं उन मोरो पर बलिहारी जाता हूँ जिनकी सुन्दर चन्द्रिकाओं को श्री कृष्ण माथे पर धारण करते हैं तथा मैं उन बाँसों पर न्यौछावर जाता हूँ जिनकी वंशी हमेशा श्री कृष्ण के साथ रहती है। मैं उस पर्वत पर न्यौछावर जाता हूँ जिनकी वंशी हमेशा श्री कृष्ण के साथ रहती है। मैं उस पर्वत पर न्यौछावर जाता हूँ जिसकी कोख से उत्पन्न नदी यमुना जो रात–दिन श्री कृष्ण के अंगो का आलिंगन करती है। जिसके फलस्वरूप वह स्वयं भी काली हो गई है। मैं वृंदावन की भूमि पर न्यौछावर जाता हूँ क्योंकि वह भी भाग्यशालिनी है क्योंकि हरि जिस पर नंगे पैर गायो को चराते हैं।[23–24]

निष्कर्षः–

सूरदास कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा में सर्वोतम स्थान प्राप्त करने में सक्ष्म हैं यद्यपि उनकी सगुणोपासना श्रीमद्भागवत कथा के दशम स्कन्ध के 46 वें तथा 47 वें अध्याय पर आधारित है अन्य कवियों की भाँति सूर ने भी उद्धव को निर्गुणोपासक मानकर गोपियों से सगुण छोड़ निर्गुण ब्रह्मा की ओर उन्मुक्त कर ज्ञान एंव भक्ति के नये आयाम पेश किये परन्तु इसके विपरित गोपियों द्वारा उद्धव को एक भ्रमर, व्यापारी के रूप में पेश किया तथा उसको कृष्ण की निष्ठुरता के उपालम्भ दिये। भागवत की गोपियां उद्धव के संदेश में शान्त दिखाई देती हैं परन्तु सूर की गोपिया विरह वेदना से दग्ध। सूरदास की सगुण भक्ति में मौलिकता दिखाई देती है क्योंकि उन्होने एक छोटे से सन्देश की परिकल्पना के स्वरूप को अति विस्तृत करके निर्गुण पर सगुण की जीत दर्ज की हैं तथा भक्ति के दूसरे दृष्टिकोण से सूर ने अन्य मौलिकता का परिचय दिया है। आत्मा परमात्मा से अविच्छिन्न संबध मानती हैं। सूर ने कृष्ण को परमात्मा तथा गोपियों को आत्मा का प्रतीक माना

है। इस प्रकार गोपियों की वेदना वस्तुतः भक्त की आत्मा की वेदना है जो परमात्मा से मिलने के लिए व्याकुल रहती है। सूरदास जी ने गोपियों के माध्यम से जो सरलता, भावुकता, बौद्धिकता के साथ उपालम्भ, विरहजन्य संताप का जो निरूपण किया है वह अपने आप में अद्‌भुत व अनुपम है। यही भक्ति निर्गुण पर सगुण की जीत है।

संदर्भः–

1. उद्धव संदेश–उद्धव को ब्रज भेजना–2 जदुपति जानि उद्धव रीति।
2. उद्धव को ब्रज भेजना–3 कहाँ जसोदा सी है मैया।
3. उद्धव को ब्रज भेजना–10 उद्यौ मन अभिमान बढ़ायौ।
4. तीन पाती तथा संदेश–15 श्याम मर पात्री लिखी बनाई।
5. उद्धव बृज आगमन–30 जबहिं कहयौ ये स्याम नहीं।
6. उद्धव का गोपियों को पाती देना–37 ब्रज घर–घर सब होति बधाई।
7. उद्धव का गोपियों को पाती देना–39 गोपी सुनहु–हरि संदेश।
8. उद्धव का गोपियों को पाती देना–42 पाती मधुबन तै आई।
9. भ्रमर गीत–46– इहीं अन्तर मधुकर इक आयौ।
10. भ्रमर गीत–47– बैसेइ बसन, बरन तन सुंदर।
11. भ्रमर गीत–49– मधुकर हम न होहि वे वेलि।
12. उद्धव गोपी संवाद–50–सुनौ गोपी हरि कौ संदेश।
13. उद्धव गोपी संवाद–55–उद्यौ हम आजु भई बड़ भागी।
14. उद्धव गोपी संवाद–62–अंखियां हरि दरसन की प्यासी।
15. उद्धव गोपी संवाद–69–आए जोग सिखावन पांडे।
16. उद्धव गोपी तीसरा संवाद–77–निर्गुण कौन देस कौ वासी?
17. उद्धव गोपी चौथा संवाद–101–बिलग जनि मानौ उद्यौ कारे।
18. उद्धव गोपी पांचवा संवाद–116–बेहरि सकल ठौर के बासी।
19. उद्धव गोपी पांचवा संवाद–126–हम तौ नंद–घोष के बासी।
20. उद्धव गोपी पांचवा संवाद–127–यह गोकुल गोपाल उपासी।
21. उद्धव गोपी पांचवा संवाद–132–आयो घोष बड़ौ व्यौपारी।
22. उद्धव गोपी पांचवा संवाद–136–हमारे हरि हारिल की लकरी।
23. उद्धव हृद्‌य परिवर्तन तथा गोपी संदेश–146– मैं ब्रज वासिन की बलिहारी।
24. उद्धव हृद्‌य परिवर्तन तथा गोपी संदेश–147– हौं इन मोरनि की बलिहारी।